Bangladesh Bharat pakistan people's forum,
28, Gurudwara Rakabganj
New Delhi 1100

Printed Matter / Book Post
Posted under Clause 122/1, of P. & T. Guide

सदीनामा

सोच के इज़ाफ़े की पत्रिका

www.sadinama.in

ISSN : 2454-2121

वर्ष-18 ○ अंक-10 ○ 1 से 31 अगस्त 2018 ○ पृष्ठ-32 ○ R.N.I. No. WBHIN 00/1974 मूल्य - 10 रुपए

सामाजिक संदर्भ में कबीर और लालन

फरीदा खातुन, एम. फिल. (विश्वभारती)
नैहाटी, २४ परगना, उत्तरी पं.बं.)

भारतीय उपमहाद्वीप में समय-समय पर ऐसे साधकों का आविर्भाव हुआ है जिन्होंने अपनी साधना की रागात्मकता में संपूर्ण मानव मन को एक लय में बाँध लिया। लालन शाह फकीर और महात्मा कबीरदास भारतीय उपमहाद्वीप के दो ऐसे ही महान साधक हैं जिन्होंने अपनी प्रखर काव्यवाणी से संपूर्ण मानव मन को एक लय में बाँध लिया है। हालांकि दोनों अलग-अलग समय में अलग-अलग स्थानों में पैदा हुए, फिर भी दोनों के सामाजिक बिन्दु पर एक दूसरे के करीब हैं। लालन अगर बांगलादेश के आइकान हैं तो कबीर पूर्वी भारत के समस्त हिन्दी भाषियों के हृदय में बसे हुए हैं। लालन और कबीर की विद्रोही चेतना काफी गहरे रूप से सामाजिक मूल्यों से जुड़ी हुई है। कबीर की तरह ही लालन के प्रारंभिक जीवन के बारे में अनेक रहस्य बने हुए हैं। कबीर की तरह लालन भी औपचारिक रूप से शिक्षित न थें। सामाजिक अवहेलना का दंश इन्हें भी झेलना पड़ा। इधर हुए कुछ शोधों के आधार पर वसंत कुमार पाल ने लालन का जीवन परिचय कुछ इस प्रकार दिया है -

''लालन का जन्म नदियाँ जिले के कुष्टिया महकमा के अन्तर्गत कुमारखाली थाना के चापड़ा भांडाराग्राम के हिन्दु कायस्थ कुल में हुआ था। पिता का नाम माधव चन्द्र कर और माता का नाम पद्मावती। जीवन की शैशावस्था में ही लालन पितृहीन हो गए। युवा होते ही उनका विवाह हो गया। विवाह सम्पन्न होने के कुछ दिन बाद वे अपने पड़ोसी बाउलदास के साथ गंगा स्नान के लिए गए। लौटते समय वह वसंत रोग से आक्रांत हो गए। रोगग्रस्त होने के कारण उनकी बाह्य चेतना लुप्त हो जाने के कारण उनके मित्रों ने उन्हें मृत समझ लिया और गंगा में प्रवाहित कर दिया। लालन के मृतप्रायः शरीर पर एक जुलाहिन की नजर पड़ा जुलाहिन रेख व सेवा सुश्रुषा से लालन स्वस्थ हुए। गाँव लौटने पर माँ और पत्नी की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। परन्तु सगोत्र समाज ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। विक्षुब्ध होकर घर का परित्याग कर दिया। (वसंत कुमार पाल, महात्मा लालन फकीर, जीवन कथा - 136 पृ. 15)

कबीर और लालन दोनों बौद्ध सहजिया, इस्लामिक सूफीवाद और बैष्णवी भक्ति की मिश्रित भारतीय संत परम्परा के उत्तराधिकारी थे। दोनों ही महायान बौद्ध धर्म के सहजिया संप्रदाय पथ के दो प्रमुख तत्वों में मानव के प्रेमी थे। इनकी कविता मे दर्शन और भाव शैली, मुहावरों की समानता है। लालन फकीर की तरह ही सगोत्रीय हिंदु समाज के हृदयहीन व्यवहार से काफी वितृष्ण हुए। अपना घर छोड़ सिराजसांई के पास जाकर फकीरी मत में दीक्षित हुए। किन्तु मुसलमान होकर भी शरीयत के मत को नहीं माना नमाज-रोजा जैसे कर्मकांडों में कोई रुचि नहीं दिखायी। वे धार्मिक अनुष्ठान का विरोध करते हुए कहा है -

''यदि सुन्नत देने होते हैं, मुसलमान
नारी का तब क्या होता है विद्यान

ब्राह्मण की पहचान होती जनेऊँ में
फिर ब्राह्मणी की पहचान होती किसमें''

(बांग्ला पत्रिका हितकारी – पृ॰ 104)

कबीर भी लिखते हैं –

''जो तु ब्राह्मण-ब्राह्मणी जाया
आन बाट ते हवै क्यों न आया''

(कबीर ग्रंथावली - हजारी प्रसाद द्विवेदी)

---ooo---

लालन गीति के तर्कयुक्त प्रश्न और प्रतिवाद मुखर भाषा में अभिव्यंजित गान को उस समय से लेकर कई दशकों बाद भी समाज के प्रभावशाली वर्ग द्वारा स्वीकार नहीं किया गया। कबीर की तरह लांछनाओं का सामना करना पड़ा। लालन को पीरों के भंड (नकली) बाउल फकीरों के कुमार्गी गुरु होने का फतवा दिया गया। इन सबके बावजूद भी कबीर की तरह लालन के गीतों में भी जाति धर्म के विरुद्ध प्रखर आवाज बार–बार ध्वनित होती है। वे लिखते हैं -

''जाति गयी जाति गयी
कहता है अजीब कारखाना
सत्य कर्म में कोई नहीं
मैं सब कुछ देख रहा।''

यम तुम्हें छोड़ेगा नहीं,
गुप्त रूप में जो वेश्या का भात खाता है।

(गोपाल गीतावली) प्रथम संस्करण - 1313 लालन फकीर के गान, द्वितीय पर्व, गीत - 56)

कबीर भी जातिवाद एवं छुआछूत जैसी कुप्रथाओं पर प्रहार करते हुए लिखते हैं-

''हिंदू अपनी करे बड़ाई
गागर छुअन न देई
वेश्या के पायन तर सोये
यह देखो हिन्दुआई,'

(कबीर ग्रंथावली - हजारीप्रसाद द्विवेदी)

---o o o---

इस प्रकार कबीर और लालन दो अलग-अलग समय में अवतरित होकर भी सामाजिक विद्रोही चेतना के स्वर में काफी करीब है। सामाजिक उपेक्षाओं का दंश दोनों को समान रूप से झेलना पड़ा। दोनों आजीवन फक्कड़ाना अंदाज में भक्ति के रसमय सागर में डुबकिया लगाते रहें, आजीवन धर्म, जाति, वर्णगत भेदभाव की दीवार को ढहाने के लिए फावड़ा-कुदाल लिए तैयार रहे। दोनों भले ही संबंधित क्यों न हो, पर सामाजिक साम्यता के रूप में कबीर और लालन उसी सामाजिक चौराहे पर खड़े नजर आते हैं जो मार्ग हमें मानवता की ओर ले जाता है।

ISSN : 2454-2121
R.N.I., No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regd. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16
1 से 31 जुलाई 2018
मूल्य : 10 रूपये
सदीनामा
Email : jjitanshu@yahoo.com

उल्लेख किया है साद ईमानी बेग की राजनीति का, इनको बजबज म्युनिसिपलिटी का चेयरमैन बनाने में फूल चन्द्रजैन योगदान भी कम नहीं था। सर्वोदय पुस्तकालय समिति अपने लोगों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए यह लेखों की श्रृंखला छाप निकाल रही है। इनके एकमात्र पुत्र अजित जैन का कहना है कि बजबज के उत्थान के लिए उनके अनेक स्वप्न थे।

जितेन्द्र नाथ शर्मा

उन पर लिखत समय मैंने सुपरहिट खबर (बांग्ला पत्रिका) के सम्पादक दिलवर होसेन (8820079055, 9239341284, 9748752793) से मदद ली फिर भी बहुत जरूरी बातें छूटे गयीं। उन्होंने अपनी पत्रिका के दो अंकों में फूलचन्द्र जैन पर छापा हम हन्दी भाषा आभार व्यक्त करते हैं।

जितेन्द्र जितांशु

स्वाधीनता दिवस एवं जन्माष्टमी की हार्दिक शुभ कामनाएँ :-

Amarnath Mishra & Co.

Head Office
50, Burtalla Street, Kolkata-700 007, Phone : 033 2270 2809, 22719629
Mobile : +919331030502/9831829418, E-mail : mishra. essential @gmail.com

Shop
207F/1, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007

Aroma Essential
31Burtalla Street, Kolkata - 700 007

Amarnath Mishra & Associates
207F/1, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007

Rose Factory
Barigawa & Jhinwar/Dist. Eath (U.P.), Hasayan, Dist. Aligarh (U.P.)

Keora Factory
Agararam & Kunmunna, Post. Chattarpur, Dist.Ganjam (Odisha)

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी पुष्पमित्र शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qrs. Budge Budge, Kolkata - 700 137, 24Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, 9231845289, E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.I., No. WBHIN/2000/1974